

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Honn) Paper - I

by Rewashon Kumar

① हिंदी साहित्य जगत में अमीर खुशरो का स्थान निश्चित करें।
अतः हिंदी साहित्य जगत में आदिकालीन कवि के रूप में अमीर खुशरो का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अपनी रचनाओं से न केवल साहित्यकारों का दिल जीता, बल्कि संगीतकारों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार खुशरो ने 1283 ई. के लगभग रचना आरंभ की थी। उनका जन्म रणत के परिवार में हुआ था। कथन जाता है कि वे बड़े विनोदी और सहृदय व्यक्ति थे। जन जीवन के साथ घुलमिल कर काव्य रचना करने वाले कवियों में कवि अमीर खुशरो का विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और मुकरीयाँ मुकरीयों लिखी थीं। आदिकाल में खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने वाले वे पहले कवि हैं। उनके द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या सौ बतायी जाती है जिनमें डाढ़ बीस-पचीस ही असल्य हैं। खालि - बारी, पहेलियाँ, मुकरीयाँ, दो सुखने, गजल आदि इनमें प्रसिद्ध हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अमीर खुशरो नम्र नामक कई व्यक्ति हुए हैं अतः इन सब रचनाओं को पहली बार अमीर खुशरो की रचनाएँ मानना एक भ्रम

अमीर खुशरो नामक मले ही कई
व्यक्ति हूँ, परंतु यह भी सच
है कि आविकाल में जो अमीर
खुशरो हूँ वो उनकी पहलियाँ और
सुकरियाँ ही प्रसिद्ध हैं। इनमें मनी-
रंजन और जीवन पर गहरे व्यंग्य
रसक साथ देखने को मिलते हैं।
अमीर खुशरो को माव की गहराई
की दृष्टि से मले ही महत्व न
दिया जाय, किंतु मावा की दृष्टि से
उनकी पहलियाँ साहित्य के इतिहास
का सदा एक महत्वपूर्ण रूप प्रशंसनीय
आगे रहेंगी। वस्तुतः उनके काव्य
में खड़ीबोली काव्य भाषा बनने का
सफल प्रयास कर रही थी। उनकी
भाषा के ऐतिहासिक महत्व का
समझने के लिए एक पहली यहाँ
प्रस्तुत है।

य एक चाल माली सो मय
सबके सिर पर ओढ़ा चय,
ज्यों-ज्यों वह चाल बिरे
माली उससे एक न बिरे, १
पहली रचना की इस शैली
का हिन्दी काव्य में आगे विस्तार
नहीं हुआ, किंतु रहस्य प्रकृति के
विकास पर उसका उभाव आवश्यक
पड़ा। चमत्कार और कुतूहल की
प्रकृतियाँ भी खुशरो की पहलियाँ
से हिन्दी काव्य में विशेष स्थान
पाने लगीं। फलतः रीतिकाल में कुतू-
हल की काव्यों की एक लंबी परंपरा
चली, जिसका अभी तक किसी ने
अध्ययन नहीं किया है।